ग्रन्थमाला ‘धार्मिक कृत्योंका अध्यात्मशास्त्र’ : खण्ड १

पारिवारिक धार्मिक व सामाजिक कृत्योंका अध्यात्मशास्त्रीय आधार

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाकी उद्घोषणा करनेवाले

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता

श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ

श्रीमती मधुरा भिकाजी भोसले एवं अन्य

सनातन संस्था

सनातनकी ग्रन्थसम्पदाकी अद्वितीयता !

सनातनके अधिकांश ग्रन्थोंमें प्रकाशित लगभग २० प्रतिशत भाग ‘सूक्ष्मसे प्राप्त दिव्य ज्ञान’ है एवं वह पृथ्वीपर उपलब्ध ज्ञानकी तुलनामें अनोखा है !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजीके अद्वितीय कार्यका संक्षिप्त परिचय

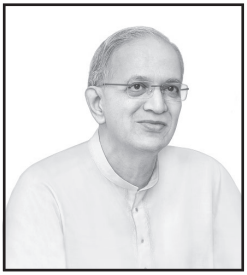

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधनासे १०.५.२०२३ तक १२४ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०९१ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर है ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-सम्पादक

५. हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य) स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा । - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

सनातनके सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधकोंकी अद्वितीयता !

श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ

कु. मधुरा भिकाजी भोसले

सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधक पृथ्वीपर कहीं भी उपलब्ध नहीं, ऐसे अध्यात्मके विविध विषयों पर गहन अध्यात्म शास्त्रीय ज्ञान सूक्ष्मसे प्राप्त करते हैं । वे कोई घटना, धार्मिक विधि, यज्ञ आदि का सूक्ष्म परीक्षण भी करते हैं । ईश्वरसे प्राप्त यह ज्ञान ग्रहण करनेके लिए उन्हें आसुरी शक्तियोंके आक्रमणोंका भी सामना करना पडता है । ऐसा होते हुए भी गुरुकृपाके बलपर वे यह सेवा करते ही हैं ।

अध्याय १ : पारिवारिक धार्मिक कृत्योंका अध्यात्मशास्त्रीय आधार

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' इस चिन्हसे दर्शाए हैं ।)

१. जन्मदिन १०

* आध्यात्मिक अर्थ, इतिहास एवं महत्त्व १०
* तिथिके अनुसार जन्मदिन मनानेका महत्त्व १२
* जीवनमें बाधाओंके विरुद्ध संघर्ष करनेकी क्षमता प्राप्त होना १३
* जन्मदिन मनानेकी पद्धति एवं उसका अध्यात्मशास्त्रीय आधार १६
* जन्मदिन मनाते समय हुई अनुभूतियां २०
* जन्मदिनपर कुछ निषिद्ध कृत्य एवं उनका अध्यात्मशास्त्रीय आधार २१
* पाश्चात्य पद्धतिके अनुसार कृति एवं वे न करनेके पीछेका शास्त्र २२
* सन्तोंका जन्मदिन २९

* छोटे बालक, समवयस्क, वृद्ध एवं सन्तों का जन्मदिन मनाना २९
२. आरती उतारना ३१
* आरती उतारनेका महत्त्व ३१
* आरती किसकी एवं कहां उतारें ? ३१
* द्वारपर न कर, वास्तु अथवा घर के भीतर आरती क्यों उतारें ? ३१
* आरती हेतु आवश्यक सामग्री एवं थालीमें उसकी रचना ३४
* आरतीकी विधि अन्तर्गत कृत्योंका अध्यात्मशास्त्रीय आधार ३६
* आरती उतारते समय सिक्केकी अपेक्षा आभूषणका उपयोग ३८
* जीवके स्तर एवं उसे होनेवाले अनिष्ट शक्तियोंके कष्टके अनुसार आरतीकी पद्धतियां एवं उनका अध्यात्मशास्त्रीय आधार ४१
* आरती उतारनेके पश्चात थालीको नीचे अक्षतपर क्यों रखते हैं ? ४४
* सन्तोंकी आरती उतारते समय एक ही बार आरती क्यों उतारें ? ४४
३. भेंट देना ४८
* भेंट कैसी हो और उसे देते समय भाव कैसा हो ? ४८
* 'भेंट'पर हलदी-कुमकुम क्यों लगाते हैं ? ४९
* सर्वोच्च भेंट कौनसी है और वह कौन दे सकता है ? ४९
४. शान्ति करना : उद्देश्य एवं शान्ति करनेका दिन ४९
५. सत्यनारायण पूजा ५८

अध्याय २ : सामाजिक कृत्योंका अध्यात्मशास्त्रीय आधार

१. उद्घाटन ६१
* पश्चिमी संस्कृतिके अनुसार फीता काटकर उद्घाटन क्यों न करें ? ६३
२. दीपप्रज्वलन ६६
* व्यासपीठपर कार्यक्रमके उद्घाटनके सन्दर्भमें नारियल फोडने

एवं दीपप्रज्वलन का अध्यात्मशास्त्रीय आधार ६७
* व्यासपीठपर दीपप्रज्वलनके सन्दर्भमें कृत्योंका शास्त्रीय आधार ७०
* दीपप्रज्वलन सन्तों या सात्त्विक व्यक्तियों द्वारा क्यों करवाएं ? ७५
३. सत्कार ७६
* सत्कार किसका एवं कौन करें ? ७६
* सत्कारपात्र व्यक्तिका (पुरुष/स्त्री) सत्कार करना ७६
* स्त्री अथवा पुरुष सन्तोंका सम्मान (सत्कार) करना ८२
* सत्कार अन्तर्गत क्या न करें ? ८३
४. ग्रन्थ-विमोचन ८४
* ग्रन्थ-विमोचनकी विधि ८५
* फीता बांधकर, तदुपरान्त उसे खोलकर विमोचन क्यों न करें ? ८६
५. विविध विषयोंपर कार्यक्रमोंमें संस्कृत श्लोक क्यों और कौनसे उच्चारित करें ? ८७
६. व्यासपीठके एक या दो सत्रीय कार्यक्रमका स्वरूप कैसा हो ? ९०
७. शोकसभा ९१
卐 प्रस्तुत ग्रन्थकी असामान्यता समझ लें ! ९४
卐 संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अन्य जानकारी ९७

आहारसम्बन्धी आध्यात्मिक दृष्टिकोण देनेवाला ग्रन्थ

असात्त्विक आहारके दुष्परिणाम

* विषाक्त आहारके दुष्परिणाम एवं उपाय
* मांसाहार वर्जित होनेके विविध कारण
* विविध धर्मग्रन्थोंद्वारा मांसाहारका निषेध

संस्कृतमें सुवचन है – 'सुखं न विना धर्मात् । तस्मात् धर्मपरो भवेत् ।।' अर्थात 'वास्तविक सुख (आनन्द) धर्मपरायण हुए बिना प्राप्त नहीं होता; इसलिए सदैव धर्मपरायण रहें ।' हिन्दू धर्मने विविध धार्मिक कृत्य, संस्कार, त्योहार, व्रत इत्यादि के माध्यमसे, संसाररूपी भवसागरमें जीवनकी नौका खेते हुए निरन्तर धर्मपरायण बननेका, अर्थात धर्माचरणका सरल अवसर प्रदान किया है । नित्यप्रति देवतापूजन तथा व्रत-त्योहार जैसे उपासनासे सम्बन्धित कृत्योंद्वारा ही नहीं, अपितु पारिवारिक तथा सामाजिक स्तरकी धार्मिक कृत्योंद्वारा भी हिन्दू धर्मने धर्माचरणका सन्देश दिया है ।

कोई भी अच्छा कृत्य हिन्दू धर्मके अनुसार विधिवत, अर्थात अध्यात्म शास्त्रपर आधारित विधियोंके पालनसे किया जाए, तो ही उस कृत्य द्वारा देवताओंके आशीर्वाद प्राप्त होते हैं और उनकी कृपासे अनिष्ट शक्तियोंसे रक्षा भी होती है । ऐसा कृत्य व्यष्टिके साथ ही समष्टिको भी आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करवाती है । इसलिए वह एक प्रकारसे समष्टि साधना ही सिद्ध होती है । इस ग्रन्थमें जन्मदिन, आरती, भेंट देना, आयुके अनुसार शान्तिविधि जैसे पारिवारिक कृत्य; उद्घाटन, दीपप्रज्वलन, सत्कार एवं शोकसभा जैसे सामाजिक कृत्योंका आधारभूत उद्देश्य, अध्यात्मशास्त्रकी दृष्टिसे उनकी उचित पद्धति तथा उनका अध्यात्मशास्त्रीय आधार भी समझाया गया है । शास्त्र समझकर श्रद्धापूर्वक कृत्य करनेपर फलप्राप्ति अधिक होती है । संस्कृत श्लोकोंके उच्चारणका महत्त्व एवं अध्यात्म-सम्बन्धी प्रवचन, ग्रन्थ-प्रदर्शनी तथा जनजागृति मोर्चे, शोकसभा जैसे प्रसंगोंमें कौनसे श्लोकोंका उच्चारण करें, इसकी जानकारी भी इस ग्रन्थमें दी है ।

आजकल हिन्दू पश्चिमी संस्कृतिके समक्ष घुटने टेक रहे हैं । स्वधर्म एवं स्वसंस्कृति का विस्मरण तथा पश्चिमी संस्कृतिके मोहके परिणाम -स्वरूप हमारे धार्मिक कृत्योंपर पश्चिमी संस्कृतिका अत्यधिक प्रभाव पडा है । जन्मदिन आरती उतारकर नहीं, अपितु केक काटकर और मोमबत्तियां बुझाकर मनाना; उद्घाटन नारियल फोडकर नहीं अपितु फीता काटकर

करना; दीपप्रज्वलन तेलके दीपसे नहीं, अपितु मोमबत्तीसे करना जैसे अनेक उदाहरणोंसे यह ज्ञात होता है । ऐसे कृत्योंसे ईश्‍वरीय चैतन्य तो प्राप्त होता नहीं; साथ ही ये कृत्य आध्यात्मिक दृष्टिसे हानिकारक कैसे होते हैं, यह भी इस ग्रन्थमें अध्यात्मशास्त्र सहित दिया गया है ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि ग्रन्थमें दिए शास्त्रासार कृत्य कर व्यष्टि (व्यक्तिगत) एवं समष्टि (समाजगत) उन्नति साध्य हो तथा हिन्दुओंमें अपने धर्म तथा संस्कृतिके विषयमें अभिमान जागृत हो । – **संकलनकर्ता**

'परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी द्वारा लिए अभ्यासवर्ग'
इस सनातनकी ग्रन्थमालाका एक ग्रन्थपुष्प

परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके वर्ष १९९२ में आयोजित अभ्यासवर्ग

परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीने वर्ष १९८६ से 'अध्यात्म' विषयपर विविध स्थानोंपर जाकर अभ्यासवर्ग लेना आरम्भ किया । सनातनके साधक श्री. विवेक पेंडसे ने परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी द्वारा वर्ष १९९२ एवं वर्ष १९९३ में लिए अभ्यासवर्गों के सूत्र लिखकर रखे थे । प्रस्तुत ग्रन्थमें अभ्यासवर्गोंमें जिज्ञासुओं द्वारा पूछे प्रश्‍न एवं परात्पर गुरु डॉक्टरजीद्वारा दिए उत्तर समाविष्ट किए गए हैं ।

गुरुकी महिमा बतानेवाला सनातनका ग्रन्थ !

गुरुकी महिमा